



जवाहरलाल नेहरू उन्नत वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्र



द्वि - वार्षिक समाचार



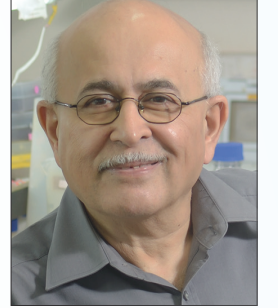
जने के समाचार

अंक 50 • मई 2018

www.jncasr.ac.in

अध्यक्ष का संदेश

समाचार के 50 वें अंक के इस स्तंभ को लिखते हुए मुझे संतोष होता है। प्रारंभ में हम प्रो सी एन आर राव को बधाई दें जिनके उद्घरणों की संख्या 1,00,000 पार हो गई है जो एक अद्वितीय उपलब्धि रही है। यह विगत कुछ महीनों में केंद्र पर अनेक उत्तेजनकारी समाचारों में से एक रहा है। शीघ्र ही उन्हें मेंचेस्टर विश्वविद्यालय से डॉक्टर ऑफ साइन्स हॉनरिक कॉसा प्रदान किया जाएगा। यह एक और सुयोग्य सम्मान रहा है तथा हम सब उनकी इस आश्चर्यजनक उपलब्धि से गर्व का अनुभव करते हैं। अन्य संकायों ने भी अनेक पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त किये हैं जिनका विवरण भीतर दिया गया है। जनेउवअके



स्वयं इस अवधि के दौरान समाचार-सृजक बन गया है। केंद्र ने 16 मई 2018 को वर्ष 2018 के लिये क्लारिफेट अनालिटिक्स इंडिया इन्नोवेशन अवार्ड प्राप्त किया है। यह पुरस्कार शैक्षिक संस्थानों की श्रेणी का रहा है, जिसने इस केंद्र को भारत के परमोच्च 12 नवोन्मेषकों में स्थान प्रदान किया है। करंट साइन्स के 10 जून के अंक में अपने लेख में डॉ गगन प्रताप ने जनेउवअके को क्षमता की उत्पादकता के संदर्भ में अत्युत्तम संस्थान के रूप में उल्लेख किया है। इसे लिखते समय में ही मुझे विश्वविद्यालय अनुदान समिति (यूजीसी) से यह (समाचार) सूचना प्राप्त हुई है कि हमारे उच्चतम NAAC श्रेणीकरण तथा NIRF श्रेणीकरण की मान्यता में हमें अधिकतर स्वायत्तता प्रदान की गई है। यह जानते हुए मुझे संतोष है कि डॉ सेबेस्टियन पीटर का नेतृत्ववाला समूह NRG COSIA कार्बन XPRIZE प्रतियोगिता के अंतिम दौर में पहुँच गया है। यह प्रतियोगिता प्रौद्योगिकियों के विकास की त्वरितता के लिये प्रोत्साहन प्रदान करती है जो कार्बन डाइआक्साइड-एक हरित-गृह-अनिल को कुछ अधिक मूल्यवान वस्तु के रूप में परिवर्तित कर सकती है। इस बीच में हमने अपने एकास्वाधिकारों, अधिगमों तथा अन्य कार्यकलापों में निरंतर प्रगति की है। यह ऐसा लगता है कि आगे हमारे लिये अत्यंत उत्तेजनकारी दिन आनेवाले हैं।

शुभ कामनाओं के साथ,

वी नागराजा

भीतर के पृष्ठों में क्या है?

- 02 अग्रणी समाचार
- 03 अनुसंधान विशिष्टियाँ
- 04 शैक्षिक कार्यकलाप
- 04 बैद्धिक-संपत्ति
- 05 अधिगम कार्यकलाप
- 05 अधिसदस्यताएँ तथा विस्तारण कार्यक्रम
- 06 नियुक्तियाँ तथा पुरस्कार
- 07-08 व्याख्यान एवं बैठकें



बधाइयाँ

गूगल स्कॉलर के अनुसार प्रो सी एन आर राव के प्रकाशनों के उद्घरणों की संख्या 1,00,000 से अधिक रही है।

जनेउवअके एक विशेष संस्थान के रूप से उल्लेखित है; NIRF के श्रेणीकरण-2018

मानव संसादन विकास मंत्रालय (MHRD-GOI) द्वारा प्रकटित राष्ट्रीय संस्थागत श्रेणीकरण ढाँचे (NIRF) 2018 के अनुसार जनेउवअके को विशेष उल्लेख संस्थाओं के अधीन चार अनुसंधान-संस्थाओं में से एक के रूप में उल्लेखित है।





संपादक की ओर से

इस समाचार पत्र का लक्ष्य है-विगत छह महीनों के ऐसे कार्यक्रमों के सारांश तथा विशिष्टियों को बता देना है जो हमारे केंद्र की वृद्धि तथा प्रगति को प्रतिबिंबित करते हैं। जैसे ही आप इस प्रलेख को पढ़ते जाएँगे वैसे ही ऐसा प्रत्यक्ष हो जाएगा कि जनेउवैअके समुदाय के अनेक कार्यकलापों ने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त की है। हमारे छात्रों की संख्या निरंतरता से वर्धित रही है जहाँ हम नव अनुसंधान परियोजनाओं और कार्यक्रमों में कार्यरत हैं तथा उनमें से कुछ तो आंतरिक हैं तो अनेक कार्यक्रम देश के भीतर तथा बाहर के सहयोगों के साथ सम्मिलित हैं। हमारे विद्वतापूर्ण अनुसरणों ने संसार भर में प्रगामी विश्वविद्यालय श्रेणीकरण की मान्यता प्राप्त की है। विभिन्न अधिगम कार्यकलापों के द्वारा हमने विस्तृत रूप से समाज के साथ कार्यरत होने को जारी रखा है। जहाँ शास्त्रीय संगीत समारोहों को केंद्र के सांस्कृतिक वातावरण के अंश के रूप में स्वागत किया जाता है वहाँ नये रंगमंदिर ने जनेउवैअके में प्रथम नाटक के चित्रीकरण को समर्थ बनाया है जिसे बैंगलूरु के लघु रंगमंदिर की ख्याति प्राप्त है जो अपने निर्माण को अपने परिसर में ले आया है।

शीबा वासु, Ph.D.

सहयोगी प्रोफेसर, तंत्रिका विज्ञान एकक जनेउवैअके

उन्नत पदार्थ स्कूल (SAMat)

इस स्कूल का सृजन जनेकें पर अधिक गोचरता तथा सक्षमता के साथ पदार्थ विज्ञान कार्यक्रम उपलब्ध कराने के लिये किया गया है। इस विचार का उद्भव जनेउवैअके में पदार्थ विज्ञान कार्यक्रम की अंतर्राष्ट्रीय समीक्षा समिति की सिफारिशों पर हुआ है। रासायनिकी, अंतर्राष्ट्रीय पदार्थ विज्ञान केंद्र (ICMS), नव रासायनिकी एकक (NCU) तथा पदार्थ विज्ञान एकक (TSU) के संकाय इस SAMat (उन्नत पदार्थ स्कूल) के अंश बनेंगे।

दि 13 फरवरी 2018 को ऑस्ट्रेलिया के न्यूक्यासल विश्वविद्यालय तथा जनेकें के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गये बहु-अन्वयनों के लिये प्रकार्यात्मकृत उन्नत नानो संरचनाओं पर सहयोग को यह 5 वर्षीय समझौता ज्ञापन वर्धित करेगा। यह अनुसंधानकर्ताओं को अनुसंधान के संचालन के लिये दौरो का आदान-प्रदान (विनियम) करने संयुक्त अनुसंधान-प्रस्तावों के लेखन के लिये तथा Ph.D छात्रों की पर्यवेक्षण के लिये तथा संगोष्ठियों के संचालन एवं प्रकाशनों के द्वारा सूचना के आदान-प्रदान करने के लिये समर्थ बनाएगा।

एक और समझौता ज्ञापन (MOU) हस्ताक्षरित है - जिसमें सम्मिलित हैं-IIT गुवाहाटी, निम्हान्स, JNC-QUT, अंतर्राष्ट्रीय नानो-प्रौद्योगिकी लैब-पोर्चुगल, मेंचेस्टर विश्वविद्यालय तथा ICAR-CPCRI.

जनेकें पर रासायनिक पारंपरिक प्रदर्शन

प्रो सी एन आर राव के एक विचार पर निर्माण किये गये एक अनुपम प्रदर्शन यह वर्णित करता है कि लावोसिएर से लेकर सांगेर तक के आधुनिक रासायनिकी के इतिहास (1979-2000) को (विडियो) (दृश्यचित्र), शब्दचित्रों, भित्तिचित्रों तथा अन्य प्रदर्शकों का उपयोग करके फिलाडेल्फिया के विज्ञान इतिवृत्त संस्थान की पंक्तियों का अनुसरण करके किया गया है। एक वर्ष से भी कम अवधि में इस के निर्माण को पूरा करने की योजना बनाई गई है।

जनेउवैअके ने दि 16 मई 2018 को वर्ष 2018 के लिये क्लारिवेट अनालिटिक्स इंडिया इन्नोवेशन अवार्ड प्राप्त किया है

क्लारिवेट अनालिटिक्स, पहले जो थॉमसन राइटर्स के बौद्धिक संपत्ति तथा विज्ञान प्रभाग का था, ने एकास्वाधिकार से संबद्ध साँचों के अनुसार भारत के अत्यंत नवोन्मेषी कंपनियों की पहचान की हैं। जनेउवैअके ने शैक्षिक संस्थाओं की श्रेणी में पुरस्कार प्राप्त किया है जिसे उसने भारत के परमोच्च 12 नवोन्मेषकों में स्थान दिया है। दूसरी बार जनेउवैअके ने इस पुरस्कार को प्राप्त किया है। इससे पहले वर्ष 2017 में प्राप्त किया था।



जनेउवैअके ने वर्ष 2018 के लिये क्लारिवेट अनालिटिकल इंडिया इन्नोवेशन अवार्ड प्राप्त किया।

अनुसंधान विशिष्टियाँ



नवल अणु जो त्याज्य के निष्काषण की कोशिका की क्षमता का लक्ष्य करते हैं जो तंत्रिकाह्रासी रोगों के लिये चिकित्सातकता के विकास में सहायता करते हैं।

जनेउवैअकें के संकाय अधिसदस्य डॉ रवि मंजिताय द्वारा किये गये अनुसंधान ने ऐसे अल्प अणुओं की पहचान की है जो त्याज्य पदार्थ के निष्काषण के लिये कोशिकाओं की सहायता करते हैं। कोशिकाओं में विषाक्त प्रोटीनों के संचयन से पाकिन्सन, अल्जिम्बर तथा हंटिंगटन जैसे तंत्रिकाह्रासी रोग अग्रसर होते हैं। ये नवल अणु ऐसे रोगों से (लड़ने) संघर्ष करने के लिये औषधि-तत्वों के विकास के लिये सहायता करते हैं जिनके लिये आजकल कोई उपचार नहीं है।

डॉ मंजिताया के समूह का लक्ष्य उस तंत्र को समझ लेने का रहा है जो इन संचयनों के विलोपन को वर्धित करता है। बेकर के खमीर को एक नमूना प्रणाली के रूप में प्रारंभ करते हुए उन्होंने ऐसे अणुओं के संवीक्षण तथा

पहचान की है जो कोशिका के शोधन तंत्र को प्रारंभ करते हैं। उसके बाद, उन्होंने उनकी क्षमता के निर्धारण के लिये मानव तंत्रिका कोशिकाओं में इन अणुओं का परीक्षण किया है। अंततः उन्होंने पाकिन्सन रोग के मूषिका-नमूने में तंत्रिकाओं के संरक्षण इन अणुओं की संभाव्यता का परीक्षण किया है।

दो अणु-तत्व सफलतापूर्वक मूषिका में विषाक्त प्रोटीन संचयन को अपकर्षित किया है। इस अनुसंधान ने न केवल इन कोशिकाओं ने किस प्रकार त्याज्य को निकालने के नवीन-तंत्र के निर्धारण में सहायता की है बल्कि ऐसे अल्प अणुओं की भी पहचान की है जिनका उपयोग तंत्रिकाह्रासी रोगों की चिकित्सा के विकास के लिये संभाव्य तत्व बन सकते हैं।

डॉ सेबास्टियन सी पीटर का नेतृत्ववाला दल NRG COSIA कार्बन XPRIZE प्रतियोगिता के अंतिम दौर में आगे बढ़ गया है

कार्बन XPRIZE प्रतियोगिता ऐसी प्रौद्योगिकी के विकास की त्वरितता के लिये प्रोत्साहन उपलब्ध कराती है जो कार्बन डाइऑक्साइड (CO₂) को कुछ अधिक मूल्यवान वस्तु में परिवर्तित कर सकती है। यह CO₂ एक विभव हरित-गृह अनिल है तथा विभिन्न स्रोतों से इसके वर्धित उत्सर्जन जलवायु परिवर्तन के लिये एक प्रमुख योगकारक रहा है।

डॉ सेबास्टियन पीटर का नेतृत्ववाला ब्रीद अल्पाइड साइन्स प्रा लि. दल कोयले तथा नैसर्गिक अनिल विद्युत संयंत्रों से उत्सर्जित त्याज्य CO₂ को मेथनॉल तथा अन्य उपयोगी उत्पादों के रूप में अनुमापीय तथा सक्षम परिवर्तन के लिये पदार्थों तथा प्रक्रियाओं का विकास कर रहा है। यह दल इस प्रतियोगिता में अंतिम स्तर के दस में एक रहा है तथा मौलप्रत्थर (कीर्तिमान) पुरस्कार 5 मिलियन यूएस डॉलर बाँट लेगा।

डॉ पीटर के अनुसार, CO₂ का उत्प्रेरक परिवर्तन रासायनिक तथा औषध निर्माणी जैसे उद्योगों में व्यापकता से

प्रयुक्त एक वस्तु-मेथनॉल के रूप में CO₂ के परिवर्तन के द्वारा CO₂ त्याज्य को सक्षमता से ऊर्जा-आपूर्ति में घाटे को न्यूनीकृत करने के द्वारा वैश्विक-ऊष्मन के प्रशमन के प्रति एक पत्थर दो पंछी वाला अभिगम रहा है।

इस दल द्वारा विकसित नवल उत्प्रेरक तथा प्रक्रियात्मक प्रौद्योगिकियाँ वाणिज्यिक उत्प्रेरकों से उच्चतर कार्यकलापों को समर्थ बनाती हैं। चूँकि, कार्बन प्रग्रहण प्रौद्योगिकी को उत्तम रूप से सिद्ध (स्थापित) किया गया है, अतः यह दल, उस प्रग्रहित CO₂ के परिवर्तन हेतु उत्तमतर प्रौद्योगिकियों के विकास पर अपना ध्यान केंद्रीकृत कर रहा है। उन्होंने इसके अतिरिक्त सर्वोपरि प्रौद्योगिकियों के अनेक घटकों को एकल इकाई के रूप में सफलतापूर्वक समेकित किया है।

प्रौद्योगिकी के सफलतापूर्वक आधारात्मक तथा अग्रणी (प्रायोगिक) स्तर के अनुमापन को पूरा कर लेने के बाद, वे अब वाणिज्यिक-स्तर पर उत्पादन पर कार्य कर रहे हैं।

एशियाई हाथी वंश नामक समूहों में रहते हैं।

नागरहोळे तथा बंडीपुर के वनों के हाथियों का पाँच वर्षों से भी अधिक समय तक वीक्षण के बाद, डॉ टी एन सी विद्या तथा समूह ने यह निष्कर्ष निकाला है कि कबिनी जीवसंख्याओं में हाथिनियों ऐसे समूह में जीवित रहती हैं जिन्हें अनुसंधानकर्ताओं ने वंश कहा है। इस प्रकार की सामाजिक संरचना, आफ्रिका में हाथी-समाज में इससे पहले पाये जाने के समान रही है।

कबिनी हाथी परियोजना के अंश के रूप में एक दशक-दीर्घ परियोजना संवीक्षण ने हाथियों के बारे में यह पता लगाया है कि भारत में ऐसा मात्र एक रहा है तथा समूह ने 300 विभिन्न हाथिनियों का पता लगाया तथा उनकी सामाजिक अंतर्क्रियाओं का वीक्षण किया है। उन्होंने यह पाया है कि हाथिनी-समाजों ने समूह या वंश का संगठन किया जो अनेक संबद्ध परिवारों से युक्त थे। इससे पहले यह विश्वास किया गया था इसका संगठन एशियाई हाथी-समाज में अस्तित्व में नहीं था।

यह संगठन वंश के आकार के कारण आच्छादित रहा होगा, इस प्रकार अनुसंधानकर्ताओं ने सोचा क्योंकि वे संगठन आफ्रिकी संबर्-जीवसंख्याओं से अधिक छोटे (अल्प) रहे हैं। इसके कारण मानव-हस्तक्षेप तथा (भ्रमण) संचलन के लिये हाथियों के लिये कम मुक्त प्रदेश-जैसे पारिस्थितिकीय प्रतिबंध हो सकते हैं। इस वंश के सदस्य एक दूसरे को उनकी गंध से पहचान लेते हैं तथा जब अपने वंश के अंग न होनेवाले हाथी से भिड़त होती है तो तब वे आक्रमणकारी होते हैं तथा उनपर अपना प्राबल्य दर्शाते हैं। वंश के सदस्य एक साथ संचलन (भ्रमण) करते-रहते हैं, तथा जब वंश के किसी भी सदस्य के पास नई सूचना मिलती है तब वे सामान्यतः पूरे वंश को यह सूचना पहुँचाते रहते हैं।

हाथी-समाज के ऐसे संगठन के बारे में समझ लेना महत्वपूर्ण होता है क्योंकि ऐसी जन (जीव) संख्या के उत्तमतर प्रबंधन होना है क्योंकि वंश के सदस्य के लिये साथ रहना आवश्यक होता है। जनसंख्याओं में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के प्रबंधन के लिये भी यह सहायता करता है क्योंकि सामान्यतः संदूषण वंशों के भीतर ही फैलने की आशंका रहती है।

इस अध्ययन को जनवरी 2018 में व्यवहरात्मक पारिस्थितिकी तथा द हिंदू में प्रकाशित किया गया है।



कार्बन XPRIZE प्रतियोगिता में ब्रीद समूह। प्रो उमेश वी वाघ्मारे, डॉ सेबास्टियन सी पीटर तथा श्री रक्षित राघवन बेल्सू।

शैक्षिक कार्यकलाप

वर्ष 2017-18 में विभिन्न उपाधि कार्यक्रमों के लिये अगस्त सत्र में 55 विद्यार्थियों के ज्वाइन होने से तथा जनवरी सत्र में 5 विद्यार्थियों के ज्वाइन होने से जनेउवैअके में विद्यार्थियों की संख्या 308 हो गई है। वर्ष 2018-19 में समेकित Ph.D, Ph.D तथा M.S. कार्यक्रमों के नियमित प्रवेश के संबंध में सूचना सभी प्रमुख राष्ट्रीय तथा प्रादेशिक समाचार-पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित किया गया है तथा हमारे (वेबसाइट) जालस्थल में घोषित किया गया है। आवेदनों के लिये अंतिम दिनांक 15 अप्रैल, 2018 रहा था।



बौद्धिक संपत्ति

स्वीकृत एकास्वाधिकार

टी. गोविंदराजु तथा अन्य
नेफथलिन डिमाइड व्युत्पन्नों का स्व-संयोजन एवं उनकी प्रक्रिया -
भारतीय एकास्वाधिकार संख्या 293450

जयंत हल्दर तथा अन्य
धनायनी प्रतिजीवाणुवीय यौगिक, संयोजन पद्धति तथा उसके नियम
-कोरियन एकास्वाधिकार संख्या 10-1816228

जयंत हल्दर तथा अन्य
प्रतिसूक्ष्म जीवाणुवीय यौगिक, उनके संश्लेषण तथा उनके अन्वयन -
USPTO No. 9,783,490 तथा ऑस्ट्रेलियाई एकास्वाधिकार कार्यालय
संख्या 2013365769

प्रस्तुत एकास्वाधिकार

सी पी सेबास्टियन तथा अन्य (अंतर्राष्ट्रीय)
आकार अनुकूलित अनुक्रमित PdCu3 नानोकण अत्युत्तम-सन्नद्ध
इंधन कोशिका उत्प्रेरण के कार्यकलाप।
हरित ऊर्जा उत्पादन के लिये अत्यंत स्थिर तथा टिकाऊ ऋणाग्र
पदार्थों के रूप में पेल्लेडियम आधारित सेलेनाइड।

टी. गोविंदराजु तथा अन्य (राष्ट्रीय प्रावस्था)
DNA शोधों के रूप में यौगिक, पद्धतियाँ तथा उनके अन्वयन।
उद्दीपक प्रतिक्रियात्मक शोधों के रूप में यौगिक, पद्धतियाँ तथा
उनके अन्वयन।

प्रो सी एन आर राव तथा अन्य, टी के माजी, के कुंदु तथा
एम ईश्वरमूर्ति तथा अन्य-द्वारा प्रस्तुत अनंतिम भारतीय
एकास्वाधिकार।

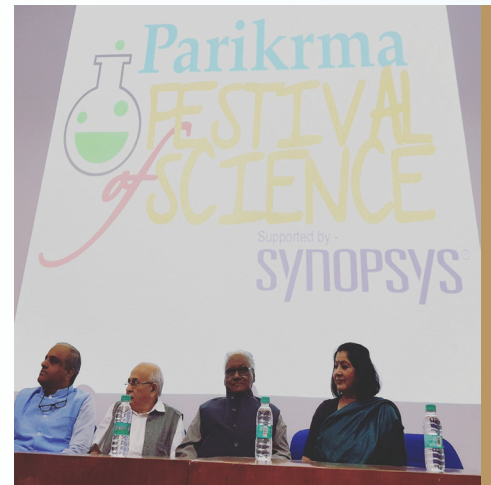
अधिगम कार्यकलाप

शिप्रौए तथा सी एन आर हॉल ऑफ साइन्स द्वारा आयोजित नवंबर तथा दिसंबर 2017 में विद्यार्थियों के लिये जैविकी में कार्यक्रम तथा विद्यार्थियों के लिये रासायनिकी कार्यक्रम के अधीन जैविकी एवं रासायनिकी में विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिये गये। लगभग 170 विद्यार्थी तथा शिक्षक इन कार्यक्रमों में उपस्थित थे तथा इसमें व्यास विषय थे - माइक्रोबाइयोम अनुसंधान, कोशिकाओं के भीतर के संकेतों को तथा चुंबकत्व को समझ लेना।

चेतना शरद कालीन स्कूल का आयोजन, जनेउवैअके में 15-22 दिसंबर 2017 के दौरान सी एन आर राव हॉल आफ साइन्स, शिप्रौए तथा कर्नाटक सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी, जैव-प्रौद्योगिकी तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस कार्यक्रम का लक्ष्य-SSLC के टॉपरों (उच्चतम श्रेणी की) विद्यार्थिनियों को विज्ञान के नवीनतम उन्नतियों के प्रति उद्घाषित करना तथा विज्ञान में व्यावसायिक जीवन का अनुसरण करने के लिये प्रोत्साहित करना। इस कार्यशाला में प्रतिभागिता करनेवाले चौबीस (24) विद्यार्थी अपने साथ 'रसायनशास्त्रदरिवु' तथा 'आजकल की रासायनिकी' की मानार्थ प्रतियाँ तथा शिप्रौए, जनेउवैअके से प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र ले गये।

परिक्रमा विज्ञान उत्सव, जिसका विषय इस वर्ष वायु था, 4-5 जनवरी 2018 को हुआ। सी एन आर राव हॉल ऑफ साइन्स, जनेउवैअके में हुए इस कार्यक्रम में 50 विद्यालयों के 200 से भी अधिक विद्यार्थी, 50 शिक्षक तथा 30 अतिथि तथा 20 स्वयं सेवक (कार्यकर्ता) प्रतिभागी बने थे।

दि 28 फरवरी से 2 मार्च 2018 तक विज्ञान अधिगम कार्यक्रम का संचालन सी एन आर राव हॉल ऑफ साइन्स, सी एन आर राव शिक्षा संस्थापन द्वारा चंदन विद्यालय (स्कूल), लक्ष्मेश्वर, गदग के संयुक्त सहयोग से किया गया। अनेक व्याख्यानों एवं प्रदर्शनों का संचालन किया गया तथा जनेउवैअके के संकायों ने इस कार्यक्रम के प्रतिभागी 150-200 विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के साथ अंतर्क्रियाएँ कीं। इस विद्यालय में 1 मार्च 2018 को भारत रत्न प्रो सी एन आर राव विज्ञान केंद्र का उद्घाटन किया गया।



अधिसदस्यता एवं विस्तरण कार्यक्रम

कार्यक्रम	कुल आवेदन	प्रदत्त अधिसदस्यताएँ
ग्रीष्म अनुसंधान अधिसदस्यता छात्रवृत्तियाँ (SRFP)	2220 आवेदन	वर्ष 2018 के लिये 86 प्रदान की गई हैं।
परियोजना अभिमुखी रासायनिकी शिक्षा (POCE)	390 आवेदन	11 विभिन्न राज्यों से 11 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
परियोजना अभिमुखी जैविकी विद्यार्थियों शिक्षा (POBE)	375 आवेदन	7 विभिन्न राज्यों से 10 का चयन किया गया है।
आगंतुक वैज्ञानिक कार्यक्रम	13 आवेदन	9 वैज्ञानिकों का चयन किया गया है।

छात्र मैत्री कार्यक्रम: जनेके पर एक दिवसीय-दौरों के लिये विद्यालय के बच्चों (विद्यार्थियों) को लानेवाले हमारे F&E कार्यालय का एक अधिगम कार्यक्रम।

वर्ष	विद्यार्थियों की प्रतिभागिता
26 सितंबर, 2017	जे.एन.वि बेळगावी के 26 विद्यार्थी
27 अक्टूबर, 2017	जे.एन.वि उडुपी के 25 विद्यार्थी
23 नवंबर, 2017	जे.एन.वि मुंडगोड के 25 विद्यार्थी
07 दिसंबर, 2017	केंद्रीय विद्यालय MEG, बेंगलूर के 25 विद्यार्थी



नियुक्तियाँ एवं पुरस्कार

संकाय अधिसदस्य

डॉ बिवास साहा

ICMS & CPMU

मानद प्रोफेसर

प्रो सौम्या स्वामीनाथन

DG ICMR & Secretary, DHR

प्रो डी एन राव

भारतीय विज्ञान संस्थान

अधिसदस्यताएँ

प्रो हेमलता बलराम

INSA अधिसदस्यता

प्रो मनीषा इनामदार

INSA अधिसदस्यता

प्रो चंद्रभास नारायण

भारतीय विज्ञान अकादमी का सदस्य

प्रो तपस के माजी

भारतीय विज्ञान अकादमी का सदस्य

डॉ सुबी जे जॉर्ज

वर्ष 2017 के लिये रासायनिक विज्ञान में

DST स्वर्णजयंती अधिसदस्यता

प्रो राघवेंद्र गदगकर

अमरीकी कला एवं विज्ञान अकादमी का

चयनित सदस्य; प्रमात्रा संभाव्यता तथा

असीम आयामीय विश्लेषण संघ का अध्यक्ष।

पुरस्कार

प्रो तपस के कुंदु

बंग रत्न (पश्चिम बंगाल

सरकार का प्रतिष्ठित नागरिक

पुरस्कार), 2018

डॉ रंजन दत्ता

MRSI पदक 2018

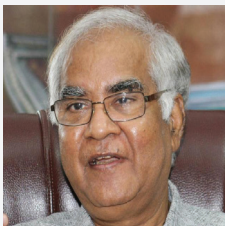
केंद्र ने अत्युत्तम उद्यान अनुरक्षण

पुरस्कार डॉ मरीगौडा स्मारक सभा,

लालबाग में 24 जनवरी 2018 को

मैसूर उद्यान-कृषि संघ से प्राप्त किया।

श्रद्धांजलियाँ



दि 6 जनवरी 2018 को डॉ बलदेव राज का दुखद देहांत (हमारी परिषद के DST नामित, NAAC के सदस्य तथा मानद प्रोफेसर)।

डॉ बलदेव राज ने अनेक वर्षों तक प्रबंध परिषद के सदस्य तथा जनेकें पर तकनीकी अनुसंधान केंद्र (TRC) के सदस्य के रूप में मूल्यवान योगदान दिया है।

केंद्र उनके परिवार को अपनी शोक-संवेदना प्रकट करता है।



डॉ आर्काट रामचंद्रन, एक प्रतिभा-संपन्न वैज्ञानिक, DST के भूतपूर्व सचिव एवं जनेउवैअकें के सामान्य सभा (निकाय)के सदस्य का निधन दि 17 मई 2018 को हुआ। डॉ आर्काट रामचंद्रन केंद्र के साथ इसकी स्थापना से ही संबद्ध (के सहयोग में) रहे तथा जनेउवैअकें के संघ के ज्ञापन के हस्ताक्षरी रहे।

केंद्र उनके वर्षों तक की उच्च मूल्यवान की अत्यंत प्रशंसा करता है।

व्याख्यान एवं बैठकें



विशेष व्याख्यान

- > सातवें वार्षिक शेख सर्क पदार्थ व्याख्यान प्रो स्टीफन एलियाँट, केंब्रीज विश्वविद्यालय द्वारा 4 दिसंबर 2017 को दिया गया।
- > डार्विन व्याख्यान - एक द्वीप की दो मक्षिकाएँ: आफ्रिकन ड्रोसोफिला में प्रजाति-विकास- विषय पर 26 दिसंबर 2017 को प्रो जेरी सोएन द्वारा दिया गया।
- > आठवें वार्षिक रासायनिकी व्याख्यान - प्रो रेशेफ तेन्ने, विज़मन्न संस्थान, इज़राइल द्वारा 9 मार्च 2018 को -पदार्थ-विज्ञान एवं नानो-प्रौद्योगिकी

के मध्य तिर्यक पथ पर अजैविक नानो नलिकाएँ तथा परिखातन जैसे नानो-कण-विषय पर दिया गया।

- > प्रो उत्पल बैनर्जी, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजेलिस ने स्तनीय पूर्व-आरोपण (अंगस्थानांतरण) विकास का चयापचयी नियंत्रण विषय पर व्याख्यान दिया।

कार्यशालाएँ तथा विचार-गोष्ठियाँ

- > रासायनिकी पथ द्वारा स्वच्छ एवं नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों पर I2CAM स्कूल, 27 नवंबर-2 दिसंबर 2017-अंतर्राष्ट्रीय संयुक्त (संकीर्ण) अनुकूलकारी पदार्थ संस्थान (I2CAM), कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, डेविस तथा जनेउवैअकें।
- > पदार्थ-विज्ञान में शरद-स्कूल, 4-8 दिसंबर, 2017
- > अनुसंधान में कीट अन्वेषण में एक दिवसीय विचार-गोष्ठी, InSearch 2018, 5 जनवरी, 2018
- > भारत-यूके द्विपक्षीय ऊष्मा विद्युतिकी कार्यशाला: त्याज्य-ऊष्मा-संचयन के ऊष्मा विद्युतिकी पदार्थ कार्यशाला, 08-10 जनवरी, 2018
- > दो हिंदी कार्यशालाओं का संचालन किया गया। एक 6 दिसंबर 2017 को श्री सवदती द्वारा तथा दूसरी 27 मार्च 2018 को डॉ शंकर प्रसाद (सेवा-निवृत्त, HAL, बेंगलूर) द्वारा।

चर्चा बैठकें

- > त्याज्य ऊष्मा संचयन के लिये ऊष्मा विद्युतिकी पदार्थ कार्यशाला-प्रो कनिष्क विस्वास, जनेउवैअकें, 8-10 जनवरी, 2018
- > अंतर्राष्ट्रीय कोशिका जैविकी काँग्रेस-डॉ राकेश के मिश्रा, CCMB, हैदराबाद, 27-31 जनवरी 2018
- > जैविकीय विज्ञान के प्रति अंतर्शाखा अभिगम (IABS-2018), प्रो बेनु ब्राता दास, IACS, कोलकता, 01-03 फ़रवरी 2018
- > ICCB-2018 उपनगरीय बैठक-प्रो श्रीकला राघवन, inStem, NCBS, बेंगलूर, 02-03 फ़रवरी 2018
- > प्रकार्यात्मक एवं आकर्षक (अन्य स्थानिक) पदार्थों में उन्नतियाँ- विषय पर 29वीं वार्षिक सामान्य बैठक,

प्रो एस आर्मुगम, MRSI, तिरुचरापल्ली, 14-16 फ़रवरी 2018

- > भौतिकी एवं पदार्थ रासायनिकी पर सम्मेलन-प्रो जी यू कुलकर्णी, CeNS, बेंगलूर, 12-13 मार्च 2018
- > वार्षिक चर्चा बैठक-जैविकी के आधार-तत्त्व-प्रो अमिताभ जोशी, जनेउवैअकें, मार्च-अप्रैल 2018



इंडिया-यूके द्विपक्षीय ऊष्मा विद्युतिकी कार्यशाला।

व्याख्यान एवं बैठकें जारी हैं ...

ध्वनि, जनेउवैअके का छात्र-निकाय, जो विज्ञान एवं सार्वजनिक नीति के परिच्छेद (सर्वश्रेष्ठ) समस्याओं पर कार्यरत है, ने " भविष्यवक्ता (नबी) तथा कवि " नामक एक नाटक 22 बुधवार, फ़रवरी, 2018 को प्रस्तुत किया। यह नाटक 25 वर्षों की अवधि (1915-1941) के दौरान महात्मा गाँधी और रवींद्रनाथ ठाकूर के बीच में हुए पत्रों के विनिमय के आधार पर था, तथा जो बेंगलूर के पुरातन अंग्रेजी-भाषा के थियेटर (नाटक-गृह) कंपनी, बेंगलूर लिटल थियेटर द्वारा प्रस्तुत किया गया था।



जनेउवैअके स्वच्छता पखवाड़ा

जनेउवैअके में स्वच्छता पखवाड़ा 01 मई 2018 से 15 मई 2018 तक आयोजित किया गया। त्याज्य प्रबंधन कंपनियों के साथ बैठक आयोजित की गई तथा स्वच्छ परिसर के अनुरक्षण के बारे में विभिन्न उपायों की चर्चा की गई। 5 मई 2018 को श्रमदान का आयोजन किया गया, जहाँ छात्रों, कर्मचारी-वृंद तथा संकायों ने परिसर के क्षेत्रों को स्वच्छ किया।

डॉ एलिजाबेत डेनियल, परामर्शदाता, धन्वंतरी, जनेउवैअके ने 6 अप्रैल 2018 को तनाव के संबंध में व्याख्यान दिया। थ....काव...ट? अपने तनाव को सफलतापूर्वक निभाना?



आगामी कार्यक्रम

- > वार्षिक संकाय तथा आंतरिक विचार गोष्ठी बैठक 13-14 नवंबर 2018 को होगी।
- > पदार्थ-विज्ञान में सीमांत - पर शरद-स्कूल, 3-7 दिसंबर 2018 को होनेवाला है।



जवाहरलाल नेहरु उन्नत वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्र

जक्कूर, बेंगलूर 560 064, कर्नाटक, भारत

फ़ोन: 91-80-22082750; फ़ैक्स: 91-80-22082766

ई-मेल: admin@jncasr.ac.in; वेबसाइट: www.jncasr.ac.in

संपादक: डॉ शीबा वासु

संपादकीय सहायता: नबोनीता गुहा तथा ग्रंथालय स्टाफ़

हिन्दी प्रारूप: श्री महादेव जी. सवदती (अनुवादक); श्रीमती नंदिनी प्रकाश (टंकक);

Dataworx - www.dataworx.co.in (रूपांकित)



© कापीराइट 2018. जनेउवैअके